8

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की संप्राप्ति में गतिविधि आधारित अधिगम की उपादेयता

डी.डी. गौतम*

बुनियादी शिक्षा प्राप्त करना भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक नागरिक का अधिकार है। होना भी चाहिए, क्योंकि उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण पहलू है। एक ऐसी शिक्षा, जिसमें शिक्षार्थियों को उनकी क्षमताओं, रुचि और बुनियादी कौशल के साथ-साथ मूल्यों का ज्ञान, समानुभूति, रचनात्मकता और नैतिक मूल्यों का विकास निहित हो। भारत सरकार द्वारा 2030 तक नीतिगत पहलुओं को प्राप्त करने के उद्देश्य से *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* लागू की है। इसके अंतर्गत हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता सत्र 2026–2027 तक 'निपुण भारत मिशन' के अंतर्गत विद्यार्थियों में आवश्यक सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के कौशल हासिल करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। यदि हमारे शिक्षार्थी प्रारम्भिक कक्षाओं में बुनियादी शिक्षा हासिल नहीं कर पाते हैं तो यह शिक्षा नीति अप्रांसगिक होगी। प्रस्तुत लेख में राजस्थान में शिक्षण विधा को बाल केन्द्रित एवं गतिविधि आधारित बनाने के उद्देश्य से एक्टिविटी बेस्ड लर्निंग (ए.बी.एल.) कक्षा के विकास के साथ-साथ ए.बी.एल. किट विकसित की गई है। जिससे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाते हुए बच्चों को बुनियादी दक्षता हासिल हो सके।

देश के प्रत्येक नागरिक का विकास शिक्षा के द्वारा संभव है। शिक्षार्थी शिक्षा केवल शब्दों के सुनने अथवा किताबों के पढ़ने से नहीं, अपितु अपने परिवेश के वातावरण एवं अनुभवों से भी हासिल करते हैं। शिक्षा बच्चों में मूल्यों, ज्ञान, सहानुभूति, रचनात्मकता, नैतिक मूल्य एवं जीवन कौशल का विकास करती है एवं भविष्य निर्माण का मार्ग प्रशस्त करती है। शिक्षा जीवन की वो कुंजी है जो मनुष्य को आदिम प्रवृत्तियों से माननीय प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख करती है। देश की सभ्य संस्कृति, सभ्यता, नैतिकता, जीवन शैली, मानवीय मूल्य, परंपरा, राष्ट्र निर्माण, आदर्श, गौरव एवं विकास इत्यादि शिक्षा की बुनियाद पर निर्भर करती है। शिक्षा, सभ्य समाज के लिए पथ-प्रदर्शक के रूप में तथा मानवीय मूल्यों का मार्ग प्रशस्त करती है।

**अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी-प्रथम*, ब्लॉक-कुम्हेर, भरतपुर (राजस्थान)

© NCERT not to be republished

वर्तमान परिदृश्य में प्राथमिक शिक्षा को शिक्षा की नींव कहा गया है। प्राथमिक स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तनों की पहल की गई है। शिक्षार्थियों को उनकी क्षमताओं के अनुरूप उन्मुख दृष्टिकोण और बुनियादी कौशल के साथ-साथ व्यक्तिगत क्षमताओं, रचनात्मक अभिव्यक्ति, मूल्यपरक तथा संस्कारी शिक्षा प्रदान करना ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए आवश्यक है कि, बच्चों के अनुभवों, मतों, जिज्ञासाओं और इनकी सक्रिय सहभागिता को प्राथमिकता दी जाएँ। इन सबके मूल में कहीं न कहीं प्राथमिक स्तर पर बुनियादी शिक्षा को सुदृढ़ बनाना शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। जिससे पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक स्तर की शैक्षणिक व्यवस्था में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान जैसे कौशल को सहजता से हासिल कर सकें। *निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009* में भी सार्वभौमिक गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक शिक्षा को सुलभ कराने की व्यवस्था एवं अपेक्षा की गई है।

शिक्षा के उद्देश्य

- समाज में सब पढ़ें, सब बढ़ें;
- संस्कार अंधेरे से प्रकाश की ओर हो;
- अनुभव अज्ञान से ज्ञान की ओर हो;
- मानवीय मूल्य असत्य से सत्य की ओर हो।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास करने की अनुशंसा के साथ-साथ शिक्षण व्यवस्था में लचीलेपन की अपेक्षा की गई है जिससे विद्यार्थी अपनी प्रतिभा और रुचि के अनुसार जीवन जीने का रास्ता सहज भाव से खोज सके। भारत सरकार द्वारा 2030 तक नीतिगत पहलुओं को प्राप्त करने के उद्देश्य से *राष्ट्रीय शिक्षा नीति* लागू की गयी है। इसके तहत शिक्षा, विद्यार्थी की आत्म-क्षमता और अवधारणा पर आधारित सीखने की एक प्रक्रिया है न कि रटने वाली प्रक्रिया। यह शिक्षा नीति बहुल दिशा के दृष्टिकोण पर केंद्रित है, जिसका मूल उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास के साथ-साथ बचपन को सुदृढ़ बनाना है। इसमें, शिक्षण प्रणाली को समग्र, लचीली एवं बहुविषयक बनाना भी है।

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की तात्कालिक आवश्यकता क्यों:

वर्तमान परिदृश्य में प्राथमिक स्तर पर अनेक बच्चे सामान्य लेख को पढ़ने, समझने और अंकों के साथ बुनियादी जोड़ और घटाव की दक्षता नहीं रखते हैं। इसी को संज्ञान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में तात्कालिक उपायों और अल्पावधि में कक्षा 3 तक मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान को आवश्यक रूप से शामिल किया गया है। जिसको *'निपुण भारत मिशन'* के अंतर्गत 2025 तक प्राथमिक विद्यालय में सार्वभौमिक आधारभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान हासिल करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस हेतु विद्यालयों में सीखने के लिए उपर्युक्त और सक्षम वातावरण तैयार किया जाएगा। इससे प्रत्येक विद्यार्थी कक्षा 3 के अंत तक पढ़ने, लिखने और अंकगणित में वांछित सीखने की दक्षता प्राप्त कर सकेगा।

© NCERT not to be republished

शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्राथमिक आधार पर आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता को प्राप्त करने के लिए चरणबद्ध तरीके से योजना तैयार की गई है। जिससे प्री-स्कूल से कक्षा 3 तक अर्थात 3 से 9 वर्ष तक की उम्र के बच्चों को केंद्र मानकर निर्धारित लक्ष्यों की संप्राप्ति की जा सके। अतः उच्च संज्ञानात्मक कौशल के विकास हेतु शुरुआती कक्षाओं में भाषायी और गणितीय कौशल पर काम करने की विशेष आवश्यकता होती है। इसी के परिप्रेक्ष्य में भारत सरकार द्वारा उपर्युक्त ज़रूरतों के आधार पर व्यावहारिक रूप से क्रियान्वित करने के लिए पूरे देश में *'निपुण भारत मिशन'* की शुरुआत की है। जिसका लक्ष्य है देश का प्रत्येक बालक कक्षा 3 के स्तर को पूरा करने के साथ बुनियादी साक्षारता और संख्या ज्ञान में दक्ष हो। इस प्रकार फाउंडेशन साक्षरता और संख्यात्मकता (एफ.एल.एन.) एक धारा है जिसमें शिक्षा के व्यापक लक्ष्य को प्राप्त करना है।

राष्ट्रीय मिशन निपुण भारत के उद्देश्य

- खेल-खोज और गतिविधि आधारित शिक्षा शास्त्र को शामिल करके इसे बच्चों की दैनिक जीवन स्थितियों से जोड़कर और बच्चों की घरेलू भाषाओं को औपचारिक रूप से शामिल करके एक समावेशी कक्षा वातावरण सुनिश्चित करना।
- स्थायी पठन और लेखन कौशल रखने वाली समझ के साथ बच्चों को प्रेरित, स्वंतत्र और व्यस्त पाठक और लेखक बनने में सक्षम बनाना।
- बच्चों को संख्या, माप और आकार के क्षेत्र में तर्क को समझने के लिए उन्हें संख्यात्मकता और स्थानिक समझ कौशल के माध्यम से समस्या समाधान में स्वंतत्र बनने में सक्षम बनाना।
- बच्चों की परिचित/घर/मातृभाषा (भाषाओं) में उच्च गुणवत्ता और सांस्कृतिक और प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करना।
- शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, शैक्षणिक संसाधन व्यक्तियों और शिक्षा प्रशासकों के निरंतर क्षमता निर्माण पर ध्यान देना।
- आजीवन सीखने की एक मज़बूत नींव के लिए सभी हितधारकों अर्थात् शिक्षकों, अभिभावकों, छात्रों और समुदाय, नीति निर्माताओं के साथ सक्रिय रूप से जुड़ना।
- पोर्टफ़ोलियो, समूह और सहयोगी कार्य, परियोजना कार्य, प्रश्नोत्तरी, रोल प्ले, मौखिक प्रस्तुतीकरण, लघु परीक्षण आदि के माध्यम से सीखने के लिए, मूल्यांकन सुनिश्चित करने के लिए।

गतिविधि आधारित शिक्षण अधिगम

प्रारंभिक शिक्षा के अंतर्गत बच्चों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने के लिए शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक गतिविधियों के साथ-साथ बच्चों को अपनी गति, रुचि एवं स्तर के अनुरूप स्वयं करके सीखने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध होने चाहिए। बच्चे पढ़ने के साथ-साथ अपने चारों ओर के वातावरण एवं अनुभवों से स्वतः ही सीखता है। शिक्षण संस्थाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को गतिविधि-आधारित, आनंददायी, रुचिकर एवं बाल उपयोगी के साथ रचनात्मक, मूल्यपरक और बुनियादी कौशल परक होनी चाहिए। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए आवश्यक है कि बच्चों के अनुभवों, मतों, विचारों, जिज्ञासाओं और उनकी सक्रिय सहभागिता को प्राथमिकता दें।

© NCERT not to be republished

बच्चों को प्रश्न पूछने, चिंतन करने, सहपाठियों से चर्चा करने के अधिकाधिक अवसर मिलने आवश्यक है। यही अवसर गतिविधि को उपलब्ध करवा सकते हैं। गतिविधि बच्चों के स्तर एवं रुचि को आधार बनाकर की जाने वाली एक कक्षा-कक्षीय प्रक्रिया है जिसमें बच्चों की सहभागिता सुनिश्चित होती है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से बच्चों के अनुभवों, विचारों व सहभागिता के साथ-साथ परिवेशीय सजगता को जोड़कर शिक्षण योजना का निर्माण किया जाता है। सीखना तब होता है, जब बच्चे मानसिक रूप से सक्रिय रहकर किसी विषय पर चिंतन-मनन करते हैं, अपने साथियों, बड़ों से विचार-विमर्श करते हैं, प्रश्न पूछते हैं, कल्पना करते हैं, अनुमान लगाते हैं, तार्किक चिंतन करते हैं, नतीजे निकालते हैं, और इस तरह अपने ज्ञान को स्वयं गढ़ते हैं। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* में इसी को 'कन्सट्रेक्शन ऑफ़ नोलेज' कहा गया है।

राज्य में एबीएल गतिविधि का प्रभावी क्रियान्वयन

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राज्य सरकार द्वारा शैक्षिक स्तर पर एवं शिक्षकों के शिक्षण कार्य में सहायतार्थ, बहुत सारे प्रयास किए जा रहे हैं जिससे प्राथमिक स्तर की नींव मज़बूत बन सके। इसी अवधारणा को समाहित करते हुए विद्यालयों में अनुकूल एवं उपर्युक्त वातावरण के साथ-साथ पाठ्यचर्या के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु आवश्यक उपकरण/संसाधन उपलब्ध करवाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके अंतर्गत एफ़.एल.एन. एवं निपुण भारत मिशन के लक्ष्यों को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से राज्य में कक्षा 1 से 5 के विद्यार्थियों के अधिगम को रुचिकर, स्थाई, सक्रिय सहभागिता एवं आत्म विश्वास अभिवृद्धि के लिए गतिविधि कक्ष के साथ-साथ कक्षा 1 से 5 के लिए कक्षावार-विषयवार गतिविधि आधारित अधिगम किट का भी विकास किया गया है। इसके द्वारा बच्चों का सीखना सुनिश्चित हो तथा अधिगम संकेतांकों के अनुसार कौशल हासिल कर सकें। शिक्षक इस किट में उपलब्ध सामग्री का उपयोग कर गतिविधि आधारित शिक्षण अधिगम करवाते हुए बच्चों की बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान की समझ को और अधिक सुदृढ़ बना सकेंगे।

आरटीई अधिनियम 2009 में शिक्षा को एक ऐसी गतिशील प्रक्रिया के रूप में देखा है जो बच्चों को गरिमामय अवसर उपलब्ध कराती है। आरटीई की धारा-29 (2) में वर्णित पहलुओं को संज्ञान में रखते हुए, अधिनियम की अक्षरशः पालन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से प्राथमिक कक्षाओं (कक्षा 1 से 5) में

© NCERT not to be republished

ए.बी.एल. प्रक्रिया का प्रभावी क्रियान्वयन किया जा रहा है। इसके अंतर्गत कक्षा-कक्षीय शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को बाल-केंद्रित तथा गतिविधि आधारित बनाने के लिए विद्यालयों में ए.बी.एल. कक्षा के विकास के साथ-साथ कक्षावार एवं विषयवार एवं एफ़.एल.एन. के उद्देश्य अनुरूप ए.बी.एल. किट (अधिगम सामग्री) को सहायक सामग्री के रूप में उपलब्ध करवाया गया है।

एबीएल के उद्देश्य

- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की समझ विकसित करना।
- प्राथमिक शिक्षा की नींव को मज़बूत करना।
- बाल केंद्रित शिक्षण को सुनिश्चित करना।
- शिक्षण को सहज, सरल, आनंददायी एवं रुचिकर बनाना।
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षण प्रक्रिया को सुनिश्चित करना।
- कक्षा-कक्षीय प्रक्रिया को गतिविधि आधारित बनाना।
- कक्षा-कक्षीय प्रक्रिया में बच्चों का ठहराव सुनिश्चित करना।
- बच्चों को कार्य करके सिखाने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध करवाना।
- बच्चों में सीखने के प्रति पूर्णता की भावना को प्रोत्साहित करना।

गतिविधि आधारित अधिगम कक्ष चित्रण

एफ.एल.एन. के अंतर्गत बुनियादी भाषा एवं संख्यात्मकता के लक्ष्य अनुसार बच्चों के अधिगम स्तरानुसार शिक्षण अधिगम को रुचिकर, आनंददायी और प्रभावी बनाने हेतु विद्यालयों में गतिविधि कक्ष का विकास किया गया है। इस कक्षा की दीवार पर प्रतिफल एवं पाठ्यक्रम की विषयवस्तु के आधार पर विषयवार हिंदी, गणित और अंग्रेज़ी का चित्रण व लेखन किया गया है। गतिविधि को बहुविषयक बनाने के उद्देश्य से पर्यावरण अध्ययन विषय के शिक्षण अधिगम में भी इसके उपयोग को भी स्थान दिया है। बच्चों को स्वतंत्र रूप से अभ्यास कार्य करके सीखने के उद्देश्य से फ़र्श से 2.5 फीट ऊँचाई तक दीवार पर श्याम-पट्ट, डॉट बॉक्स, बॉक्स बोर्ड का स्थान दिया गया है। कक्षा में बच्चों को समूहवार कार्य करने के लिए चौकी भी उपलब्ध करवाई गई है। हिंदी चित्रण में कथाचित्र, कहानी, कविता, वर्णमाला, वर्ण पहचानें और शब्द बनाएँ। अंग्रेज़ी विषय आधारित चित्रण में स्टोरी, पोएम, गेम तथा अल्फाबेट को स्थान दिया गया है। गणित विषय में गिनती, पहाड़े पैटर्नें, ज्यामिति आकृति, वर्ग पहेली मापन तथा जोड़-घटाव के साथ-साथ आकार वृत्त, आयत, त्रिभुज जैसी 2-डी आकृतियों का चित्रण किया गया है। इस प्रकार बच्चों को स्वतः एवं शिक्षक की मदद से स्थाई सीखने और समझने की रुचि परिलक्षित होती है।

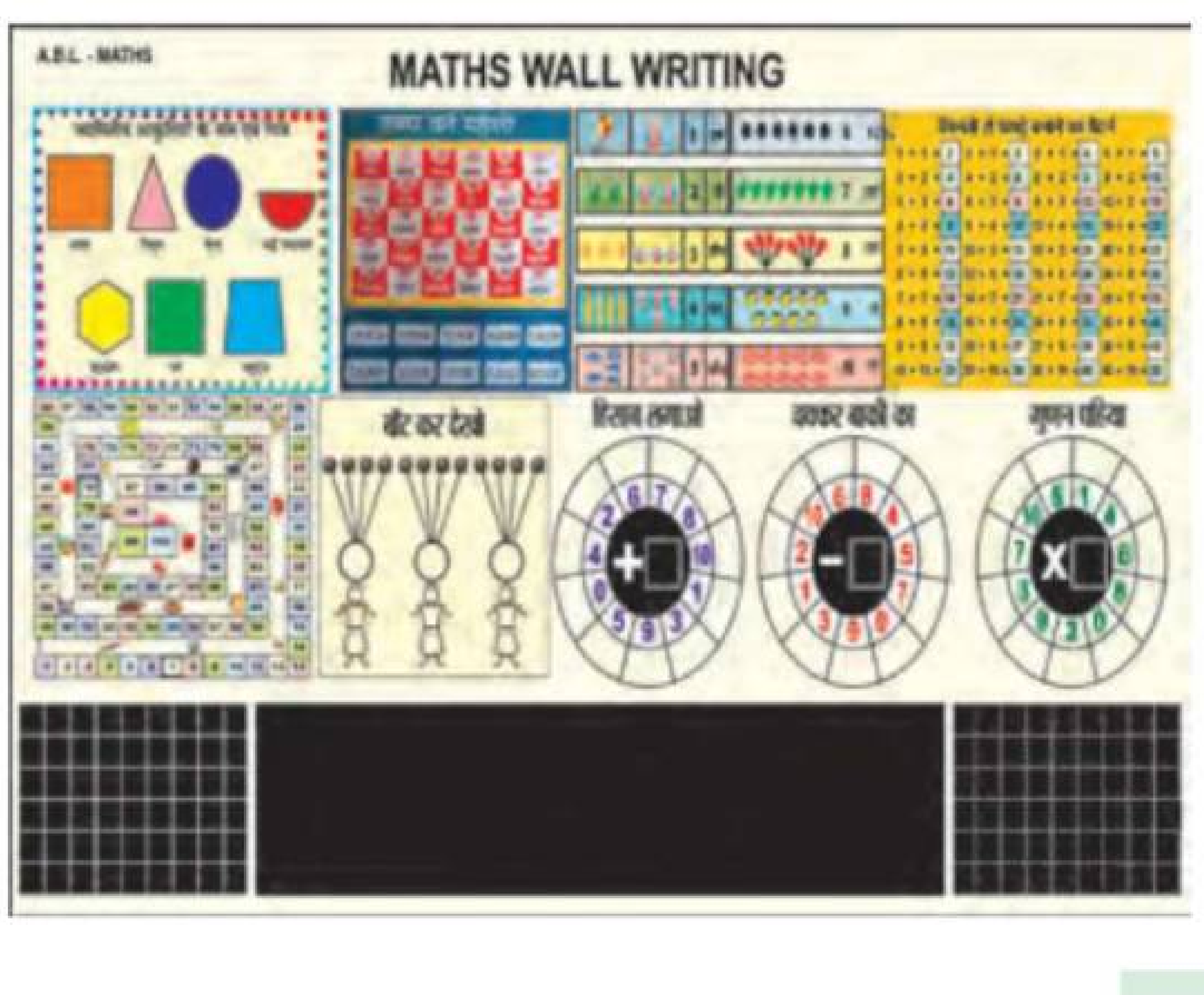

© NCERT not to be republished

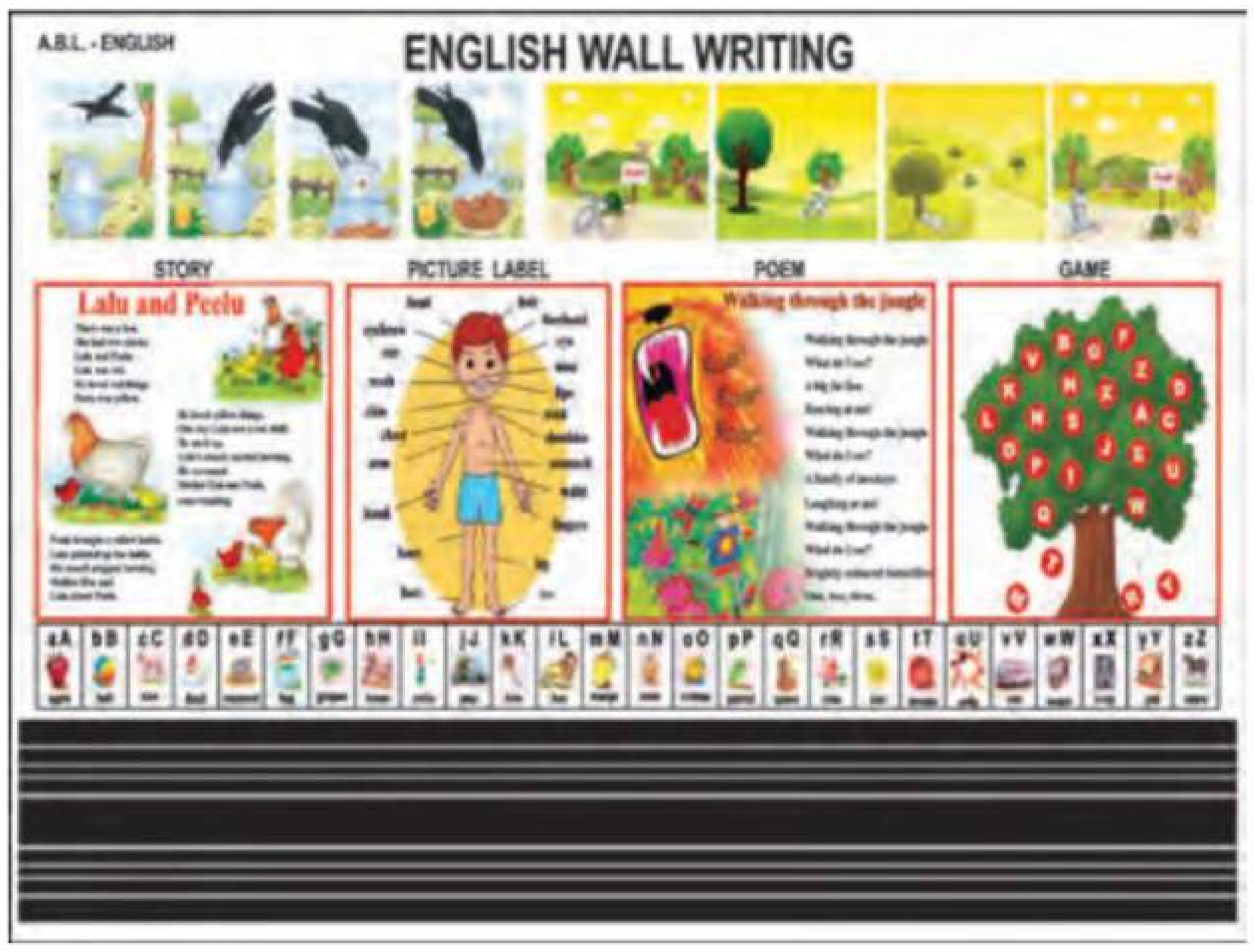

(दीवार चित्रण)

एफ.एल.एन. की अवधारणा में प्रिंट मटरियल को लक्षित किया है। इसी उद्देश्य से विषयवार दीवार लेखन के माध्यम से कथाचित्र, वर्ण पहचान, शब्द निर्माण, मौखिक अभिव्यक्ति, सृजनशीलता का विकास, विश्लेषण क्षमता, पढ़ने लिखने का अभ्यास, कविता सुनना और गाना, सचित्र वर्ण से अनुभव विस्तार, चर्चा, अभिनय, समूह संवाद, चिंतन के कौशल विकास के उद्देश्य समाहित है। बच्चे आकृतियों की पहचान, आकार, नाम, गिनती, पहाड़े, जोड़, घटाव, बँटवारा, हिसाब लगाने, स्थानीयमान तथा विश्लेषण कार्य सीख सकेंगे। गिनती सिखाने के लिए मूर्त वस्तुओं को गिनवाना जिसमें अर्धमूर्त से अमूर्त और अमूर्त से अंक मिलान की समझ विकसित हो सकेगी। अक्षर ज्ञान, अल्फावेट, गिनती, पहाड़े, ज्यामितीय आकृतियाँ, शरीर के अंग, कथाचित्र, कविता, आओ वर्ण पहचानें, शब्द बनाएँ, मात्रा वाले शब्द, पजल्स, हमारे त्योहार, राष्ट्रीय प्रतीक, हिसाब लगाना जैसे चित्रण बच्चों में देखने-पढ़ने के अवसर उपलब्ध होंगे। इसके साथ-साथ मौखिक अभिव्यक्ति को बढ़ावा, अनुभव बांटने, अनुभवों को विस्तार देने, चर्चा करना, अभिनय, समूह संवाद तथा शब्द संपदा से भाषा एवं संख्या ज्ञान की समझ के कौशल का विकास होगा।

दीवार पर बने श्यामपट्ट पर बच्चों को अक्षर बनावट और शब्द लेखन, वर्तनी के साथ शब्द एवं छोटे-छोटे वाक्य लिखने के अवसर उपलब्ध होने से उत्साह बढ़ेगा और इनकी सहभागीता से सीखने की गति बढ़ेगी। इस प्रकार बच्चों में सृजनशीलता का विकास एवं विश्लेषण क्षमता बढ़ाने के लिए उद्दीपक का कार्य होगा, जिससे अभ्यास के साथ-साथ आनंद भी प्राप्त कर सकेंगे। गतिविधि कक्षा में दीवार चित्रण एक उदाहरण मात्र है लेकिन शिक्षक सीखने के प्रतिफल एवं पाठ्यक्रमणीय उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शिक्षक अपने अनुभव, बच्चों के शैक्षिक तथा सीखने के स्तर को ध्यान में रखते हुए और भी विभिन्न गतिविधियाँ करवा सकते हैं। इससे विद्यालय में चाइल्ड फ्रेंडली वातावरण का विकास भी होगा। इस प्रकार एबीएल कक्ष में दीवार चित्रण की सहायता से बच्चों को गतिविधि करवाते हुए बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के सभी घटकों पर कार्य करवा सकते हैं। किसी भी अधिगम को करवाने हेतु प्रथम चरण में

© NCERT not to be republished

छात्र अध्यापक के मध्य वार्तालाप का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यही कारण है कि प्राथमिक कक्षाओं में मौखिक अधिगम का अपना स्थान है। इसी को संज्ञान में रखते हुए ए.बी.एल. कक्षा भी 'अपने आप अधिगम' भी अधिगम का एक अच्छा स्रोत है।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में किट की सामग्री का उपयोग

प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की दक्षता हासिल करने के उद्देश्य से ए.बी.एल. कक्षा विकास एवं किट उपलब्ध करवाई गई। गतिविधि आधारित शिक्षण में कक्षीय प्रक्रिया सतत व व्यापक मूल्यांकन के आधार पर क्रियान्वित होगी। बच्चों का आधार रेखा आकलन उपरांत कक्षा में स्तरानुसार एवं सीखने की गति के आधार पर छोटे-छोटे समूह का निर्माण करते हुए शिक्षण कार्य किया जाना है। शिक्षक, गतिविधि आधारित किट की सामग्री को 'निपुण भारत मिशन' के घटक एवं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर दक्षता कौशल विकास हेतु सामग्री का शिक्षण कार्य में अधिकतम उपयोग करेंगे। कक्षा-कक्षीय एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में किट की सामग्री एवं गतिविधि कक्षा में चित्रण का उपयोग करते हुए सीखने के प्रतिफल को प्राप्त करने हेतु उच्च स्तरीय कौशलों पर भी कार्य करेंगे, जैसे— संप्रेषण, अभिव्यक्ति, सृजनशीलता, तर्कशीलता एवं परिवेशीय सजगता, विषय के प्रति रूझान आदि।

एफ.एल.एन. के लक्ष्य, दक्षता एवं मुख्य घटक के सापेक्ष विषयवार ए.बी.एल. किट सामग्री

	सूचक	दक्षता	मुख्य घटक	हिंदी	अंग्रेजी
बुनियादी साक्षरता	मौखिक भाषा	परिवेश व कक्षा की प्रिंट सामग्री पर दोस्तों और शिक्षकों से बातचीत, कविताओं/गीतों के एक्शन के साथ सुनना। गीत सुनाना और शब्दों को दोहराना, प्रश्न पूछने के लिए भाग लेना और सुनना। अनुभव बताना और जवाब देना। आवाज़ को उतार-चढ़ाव के साथ सुनना।	मौखिक भाषा विकास	मुखौटे, चित्र, शब्द, वाक्य व कहानी पजल्स, फ्लैश कार्ड, खेल शब्द पट्टिका, गतिविधि कार्ड।	Flash, Domino, Activity, picture and Story Cards, Word wheel, Spiral, calendar, questions framing dice.
			ध्वनि जागरूकता का विकास	गतिविधि कार्ड, श्रुत लेखन, आओ शब्द बनाएँ एवं फ्लैश कार्ड।	Stencil, flash, Domino, word, Picture, Activity Cards, Board Games and worksheets.
			डिकोडिंग	गतिविधि कार्ड, फ्लैश कार्ड, हॉर्डिंग, घुम्मकड़ एवं चित्रात्मक मुहावरे।	Stencil, Flash, Action, Domino, Picture cards, Spiral calendar, word window chart & Board games.
			शब्दावली विकास	चकरी, मात्रा ज्ञान कलेन्डर, गतिविधि कार्ड, शब्द सीढ़ी खेल, आओ शब्द बनाएँ, शब्द कोश एवं पर्यायवाची खजाना।	Flower, Flash, Picture, Activity, Domino cards, Word wheel, Board games, Spiral calendar and Word roller.

© NCERT not to be republished

संख्या ज्ञान	पढ़ना	किताबों को देखना और पढ़ना। कहानी कहना और अभिनय करना। अक्षरों और संगीत ध्वनि को पहचानना। दो अक्षर वाले शब्द को पढ़ना। वर्तनी के साथ शब्द लिखना। पाठ के छोटे-छोटे वाक्य पढ़ना। प्रश्नों के उत्तर देना। शब्दावली का उपयोग कर बातचीत करना। प्रिंट सामग्री पर बात करना।	धारा प्रवाह पढ़ना	गतिविधि कार्ड, कहानी व कविता।	Activity, story, sentence making cards, grammar pizza, word roller, spiral calendar, Board Game and Mini Biography & Worksheets.
			समझ के साथ पढ़ना	गतिविधि कार्ड, चुटकुले, विज्ञापन, कहानी, कविता व हॉर्डिंग।	Activity, story, sentence making cards, grammar pizza, word roller, spiral calendar, Board Game and Mini Biography and Worksheets.
			पढ़ने की रुचि व आदत का विकास	गतिविधि कार्ड, कहानी व कविता।	Activity, Domino, Story and Mini Biography card, Board games, Spiral calendar, Word wheels, Word Roller & Worksheets.
	लेखन	खेल वाले अक्षरों को लिखने का प्रयास, अक्षर बनाने में पेंसिल का उपयोग। अपने नाम को पहचानना और लिखना। आत्म अभिव्यक्ति शब्दों की मात्राओं से परिचय, क्रिया शब्द और विराम चिह्न को पहचानना। लघु संदेश लिखना, व्याकरणीय रूप से वाक्य, पैराग्राफ और कहानियाँ लिखना।	प्रिंट जागरूकता विकास	हॉर्डिंग, विज्ञापन, सड़क सुरक्षा और गतिविधि कार्ड।	Activity, Action, Picture and story sequencing cards, word roller, spiral calendar, Board games and Word window charts.
			लेखन	कार्यपत्रक, डायरी लेखन, पत्र लेखन और आओ कहानियाँ लिखें।	Stencils, Activity card, Sentence making and spiral calendar, grammar pizza, questions framing dice, worksheets and Mini Biography card.

© NCERT not to be republished

	संख्यात्मक	गिनती 10 से 9999 तक संख्या पहचानना, पढ़ना और लिखना। घटनाओं में तुलना करना, वस्तुओं को वगीकृत करना। 999 तक की संख्याओं का जोड़ और घटाव 3D आकृतियों का वर्णन करना। आयत, त्रिभुज, वृत्त, अंडाकार जैसी 2D वस्तुओं की पहचान व वर्णन करना। 2 से 10 तक की संख्या का गुणन और विभाजन, मानक इकाईयों, लंबाई, दूरी, वजन, क्षमता का अनुमान लगाना। कलेंडर पहचान और घड़ी पर समय पढ़ना। आकारों के पैटर्न की पहचान और विस्तार करना।	प्रारम्भिक गणना	ज्यामिति आकृतियाँ, स्टेनसिल, संख्या चकरी, शॉप कार्ड, सिक्के, फ्लैश कार्ड और कार्यपत्रक।
			संख्या ज्ञान और संख्या संक्रियाएं	डोमिनो, फ्लैश, फ़िश, गतिविधि कार्ड, संख्या पासा खेल, साँप सीढ़ी, संख्या निर्माण कलैण्डर, रंग संकेतीकरण चार्ट, स्थानिक मान पट्टिका, संख्या पट्टिका और खिड़की संख्या, आकृतियाँ, जोड़ घटाव रोलर, खिलौना नोट, पहाड़ा, चकरी, मेरा बाज़ार, 2D और 3D आकृतियाँ, ज्यामिति बोर्ड, शॉप कार्ड एवं गतिविधि कार्ड।
			आकार और स्थानिक समझ	ज्यामिति आकृतियाँ, वर्ग पहेली, 3D आकृतियाँ, ज्यामिति बोर्ड, शॉप कार्ड एवं गतिविधि कार्ड।
			मापन	घड़ी, मुद्रा, समय कलैण्डर, मीटर स्केल, दिन व महीने डोमिनो कार्ड।
			डाटा का रख-रखाव	ज्यामिति आकृति, वर्ग पहेली।
			गणितीय सम्प्रेषण	गतिविधि कार्ड, मेरा बाज़ार, दीवार चित्रण और कार्य पत्रक।

यहाँ यह समझना आवश्यक है कि प्राथमिक स्तर पर बच्चे कैसे सीखते हैं। इस प्रयोजन को ध्यान में रखते हुए विद्यालयों में स्तर अनुसार सीखने की सामग्री, उपकरण, गतिविधियाँ और वातावरण उपलब्ध करवाना अपेक्षित है। शिक्षकों द्वारा प्राथमिक स्तर पर बच्चों को सीखने की खेल विधियाँ और बाल केन्द्रित शिक्षण पद्धतियों को अपनाते हुए शिक्षण कार्य सुनिश्चित करना नितांत आवश्यक है। इसी उद्देश्यों को लक्षित करते हुए बच्चों में सशक्तीकरण, सक्रिय सहभागिता, भावनात्मक संबलन और आत्मविश्वास में अभिवृद्धि के लिए बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान, दक्षता आधारित ए.बी.एल. किट सामग्री का विकास किया गया है।

© NCERT not to be republished

(किट सामग्री)

सीखना एक सतत प्रक्रिया है इसलिए 'सीखना' सिर्फ़ विद्यालय में ही नहीं होता अपितु परिवार एवं बाह्य वातावरण से भी होता है। पूर्व ज्ञान व घर से प्राप्त अनुभवों को भी शिक्षण में जाना ज़रूरी है। सभी बच्चे सीख सकते है यदि, इन्हें अपनी ही गति से सीखने दिया जाए और सीखने के अपने ही तरीकों का अनुसरण करने दिया जाए। सीखना 'समग्रता' में ही संभव है न कि जब ज्ञान को छोटे-छोटे टुकड़ों में जोड़ा जाए या विषयों में बाँटा जाए। इसलिए सीखने के लिए समेकित विधि ही उत्तम होती है। प्राथमिक स्तर पर बच्चे एक दूसरे के साथ अंतःक्रिया (खेलते-कूदते, हँसते-गाते) करते हुए बेहतर तरीके से सीख पाते हैं। सीखने के दौरान बच्चे बहुत-सी गलतियाँ भी करते हैं जो इनके सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है इसलिए गलतियाँ करके ही वे सीखते हैं। गलतियाँ बच्चों को विश्लेषण व तुलना करने का अच्छा अवसर उपलब्ध कराती है। जिससे अवधारणाओं के बेहतर समझ बनाने एवं विभिन्न संदर्भों/परिस्थितियों में अनुप्रयोग करने के लिए प्रेरित करती है।

वर्तमान में राज्य में संचालित विद्यालयों की प्राथमिक शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाने तथा निपुण भारत मिशन के लक्ष्य अनुसार बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान की दक्षता हासिल करने के उद्देश्यों से गतिविधि (ए.बी.एल.) कक्षा चित्रण एवं गतिविधि (ए.बी.एल.) किट सामग्री का शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में उपयोग में लिया जा रहा है। उपरोक्त तालिका में पाठ्यक्रम अनुरूप विषयवस्तु, एफ.एल.एन. के मुख्य घटक तथा सूचक आधारित दक्षताओं को हासिल करने के उद्देश्यों से शिक्षकों द्वारा प्राथमिक कक्षाओं में बाल केंद्रित एवं गतिविधि आधारित शिक्षण-आधिगम कार्य करवाया जा रहा है।

निष्कर्ष

गतिविधि आधारित अधिगम प्रक्रिया सीखने के उच्च कौशल विकास की अवधारणाओं की बेहतर समझ बनाने एवं विभिन्न संदर्भों/ परिस्थितियों में अनुप्रयोग करने के लिए प्रेरित करती है। अतः गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने एवं बुनियादी दक्षताओं को सुदृढ़ बनाने के लिए कक्षा-कक्षीय 'औपचारिक शिक्षा की दुनिया में प्रवेश करने की दिशा में पहला कदम' प्रक्रिया में बाल केंद्रित शिक्षणशास्त्र के अनुसार गतिविधि आधारित अधिगम करवाते हुए सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाना अपेक्षित है। प्रत्येक बच्चे को करके सीखने के पर्याप्त अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित करते हुए शिक्षक द्वारा

© NCERT not to be republished

इसमें मददगार के रूप में बच्चों को स्वतंत्र विचार रखने के लिए प्रेरित किया जाए। यह गतिविधि आधारित अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग है जो कि प्रारम्भिक कक्षाओं में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की दक्षता के साथ-साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लक्ष्य को प्रतिपादित करते हैं। अतः विद्यालयों में संस्थागत संसाधनों, टीचिंग लर्निंग मटेरियल (टी.एल.एम.) के विकास एवं उपयोग को सर्वोपरि प्राथमिकता दी जाए। इससे अनुभव आधारित सिखाने का सपना साकार होगा साथ ही, बुनियादी शिक्षा खुद-ब-खुद मज़बूत होती चली जाएगी। इसके लिए हम सभी (अभिभावक, अध्यापक, समाज और सरकार) के द्वारा सांझी सकारात्मक सहभागिता सुनिश्चत करनी होगी। साथ ही शैक्षिक सुधार की प्रक्रिया के लिए शिक्षा का आधारभूत ढाँचा सुदृढ़ करते हुए विद्यालयों में भौतिक संसाधन एवं पर्याप्त शिक्षण अधिगम की उपलब्धता सुनिश्चित किया जाना नितांत आवश्यक है।

संदर्भ

गौतम, डी.डी. 2018. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए गतिविधि आधारित अधिगम (ABL). *शिविरा पत्रिका*, अंक 7, माध्यमिक शिक्षा विभाग, राजस्थान.

2009. *निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम*. भारत का राजपत्र. कानून एवं न्याय मंत्रालय, भारत सरकार.

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के संदर्भ में गतिविधि आधारित अधिगम शिक्षक प्रशिक्षण मॉड्यूल. 2021. आर.एस. सी.आर.टी., राजस्थान.

स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग. शिक्षा मंत्रालय. राष्ट्रीय साक्षरता एवं संख्या ज्ञान दक्षता पहल (निपुण भारत). *विवरणिका*. भारत सरकार.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.

© NCERT not to be republished